स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

कला संकाय के अंतर्गत पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

"अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श"

शोधछात्र

मणियार अखिल बाबुसाब

(M.A., D.Ed., B.Ed.)

शोधनिर्देशक

डॉ.बळीराम संभाजी भुक्तरे

सहाय्यक प्राध्यापक हिंदी विभाग

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,उदगीर

जि.लातूर 413517

अप्रैल 2016

"अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श"

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
1	अनुसंधान के बिंदू	3
2	भूमिका	4
3	अनुसंधान का उद्देश्य	6
4	अनुसंधान पद्धतियाँ	6
5	अनुसंधान कार्य प्रथम अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व द्वितीय अध्याय - मुस्लिम विमर्श :अर्थ एवं स्वरूप तृतीय अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन चतुर्थ अध्याय -अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श पंचम अध्याय -अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श षष्ठम् अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श सप्तम् अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में शिल्पगत अध्ययन	6
6	अनुसंधान की उपयोगिता	10
7	उपलब्धियाँ	11
8	अनुसंधान की व्याप्ती और सीमाएँ	11
9	मूल्यांकन एवं निष्कर्ष	12
10	परिशिष्ट संदर्भ ग्रंथ सूची	13

“अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श”

प्रथम अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
1.2 व्यक्तित्व
1.2 कृतित्व
द्वितीय अध्याय - मुस्लिम विमर्श :अर्थ एवं स्वरूप
2.1 मुस्लिम विमर्श शब्द की व्युत्पत्ति
2.2 मुस्लिम विमर्श शब्द का अर्थ एवं स्वरूप
2.3 मुस्लिम विमर्श की परिभाषा
2.4 मुस्लिम विमर्श का वर्गीकरण
तृतीय अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन
3.1 जहरबाद उपन्यास का कथ्यगत अध्ययन
3.2 झीनी-झीनी बीनी चदरिया उपन्यास का कथ्यगत अध्ययन
3.3 दंतकथा उपन्यास का कथ्यगत अध्ययन
3.4 समर शेष है उपन्यास का कथ्यगत अध्ययन
3.5 मुखड़ा क्या देखे उपन्यास का कथ्यगत अध्ययन
चतुर्थ अध्याय -अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श
4.1 अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में सामाजिक मुस्लिम विमर्श
4.2 अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों म आर्थिक मुस्लिम विमर्श
पंचम अध्याय -अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श
5.1 अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में धार्मिक मुस्लिम विमर्श
5.2 अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श
षष्ठम् अध्याय-अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श
6.1 अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में राजनीतिक मुस्लिम विमर्श
6.2 अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में शैक्षिक मुस्लिम विमर्श
सप्तम् अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में शिल्पगत अध्ययन
7.1 शिल्प शब्द की व्युत्पत्ति
7.2 शिल्प की परिभाषा
7.3 शिल्प का स्वरूप
7.4 शिल्प के तत्त्व
7.5 उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन
मूल्यांकन एवं निष्कर्ष
परिशिष्ट
संदर्भ ग्रंथ सूची

“अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श”

1) भूमिका (Introduction)

साहित्य समाज का दर्पण होता है। इस दृष्टि से उपन्यास विधा एक मात्र ऐसी विधा है जो अपने आप में अधिकाधिक विषयों को बड़े कलात्मकता के साथ समेटती है। भारत देश अलग-अलग जाति, धर्म, संस्कृति होने के पश्चात् भी एकता दिखाई देती है। जिनमें हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि सभी जाति धर्म के लोग निवास करते है। वे भाईचारा निभाते हुए अमन और शांति से रहते है। इस कारण देश में विविधता में एकता दिखाई देती है।

उपन्यास जीवन को सबसे सजीवता से प्रतिबिंबित करने वाली साहित्यिक विधा है। समकालीन उपन्यासों की लंबी परंपरा में प्रगतिशील चेतना के विभिन्न आयाम क्रमशः उद्‌घाटित होते हैं। पश्चिमी सभ्यता के साथ संपर्क तथा ज्ञान-विज्ञान के नये-नये आविष्कारों ने भारतीय चेतना में कितना बड़ा परिवर्तन हुआ है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण उपन्यास विधा है। भारतीय स्वतंत्रता आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी, जिसमें मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की मान्यताओं को हर स्तर पर बुरी तरह झकझोर दिया। उसके जीवन-मूल्यों एवं नैतिकता तथा मानवीयता के आदर्श को बहुत बड़ा सदमा पहुँचा हुआ है।

आधुनिक हिंदी उपन्यासकारों में अब्दुल बिस्मिल्लाह अपने अनूठे व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध है। अब्दुल बिस्मिल्लाह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। गद्य और पद्य के विधाओं में आपका समान अधिकार है। आपने कविता, कहानी, उपन्यास, एकांकी, बालोपयोगी कहानियाँ, अनुवाद आदि विविध विधाओं पर लेखन किया है। इस तरह उनका रचना संसार विस्तृत है। उनकी अपनी एक जीवन दृष्टि है। उनके उपन्यासों में वर्तमान व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है। उनके उपन्यासों में मुस्लिम विमर्श सूक्ष्मतः सेदृष्टिपात होता है। उपन्यासकार ने अपने साहित्य में जीवन के साथ-साथ विभिन्न संदर्भों को दर्शाया है। यह संदर्भ वर्तमान विसंगतियों से गुजरते हुए आम आदमी के अस्तित्व पर गहराने वाले संकटों के विविध अंग को दर्शाते हैं।

‘इस्लाम’ शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ है-शांति में प्रवेश करना। यह शब्द सुलह, कुशलता, विनम्रता, आज्ञापालन, आत्मसमर्पण, स्वेच्छापूर्वक अधीनता (स्वयं की) स्वीकार कर लेने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस्लाम शब्द का लाक्षणिक अर्थ होगा “वह धर्म जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं (परमात्मा) की शरण लेता है तथा अन्य मनुष्यों के प्रति अहिंसा एवं प्रेम का व्यवहार करता है। धार्मिक दृष्टि से कुरआन और हदीस (मुहम्मद साहबस.) के सत्य वचन) द्वारा निर्दिष्ट आचरण पर विश्वास रखना ही इस्लाम है।”

वर्तमान में सामाजिक स्थिति मेंअधिक विषमता तथा आर्थिक स्थिति एवं असमानता दिखाई देती है। इसका प्रभाव मुस्लिम समाज पर भी अनिवार्य रूप से हुआ है। मुस्लिम समाज में भी उनके जीवन के मानदंड आज परिवर्तित हो रहे है। कल की मान्यताएँ और परपराएँ आज युग के साथ असमर्थ दिखाई दे रही है। मुस्लिम समाज में जो नयी पीढ़ी उभर रही है, उसके सामने यह परिवर्तनशीलता स्पष्ट है। मुस्लिम युवक रूढ़ि और परंपराओं के झूठे गौरव कासमर्थन नहीं करती और जिसके संबंध में अब किसी को भ्रम नहीं। तथाकथित, पराजित पीढ़ी के गीत गाए जाने का यह युग नहीं हे। वर्तमान स्थिति में संघर्ष गतिशील हो चुका है। इसलिए आज मुस्लिम समाज को समयानुसार ही आशावादी दृष्टि की आवश्यकता है।

मुस्लिम समाज और उनकी समस्या को किस प्रकार हल किया जा सकता है इसको मद्देनजर रखते हुए मुस्लिम समाज की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक,सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा शैक्षिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए उसकी समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। इन समस्याओं को वर्तमान में ज्ञात करने का प्रयास अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने उपन्यासों में किया है। इस कारण मैंने अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिमविमर्शको अपने अध्ययन का केन्द्र बनाया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के रुपरेखा में बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों को प्रस्तुत किया गया है। जिनमें मुस्लिम समाज की विभिन्न समस्याओं का समग्र चित्रण किया गया है। मुख्य रुप से सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और शैक्षिक प्रश्नों को उजागर करने का प्रयास किया है। इस प्रकार विभिन्न आयामों के द्वारा अध्ययन किया है।

2) अनुसंधान का उद्देश्य (Research Objectives)

“अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श” इस अनुसंधान कार्य के पिछे मेरे अहम् उद्देश्य है जो इस प्रकार है –

1) मुस्लिम समाज के मन से अल्पसंख्यक होने का डर निकालना।
2) मुस्लिम समाज को व्यक्तिगत भावभूमि से उपर उठाकर सामाजिकता के स्तर पर पहुँचाना।
3) हिंदू-मुस्लिम समाज में अपनापन, आत्मीयता और मित्रतापूर्ण व्यवहार बनाना।
4) स्वतंत्रापूर्व काल से जो दानों समाज का संबंध था उसे अभिन्न और अतुट बनाए रखना।
5) मंदिर-मस्जिद विवाद समाप्त करना और धार्मिक कटरता को कम करना।
6) अज्ञान शिक्षा और उच्च शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना।
7) मुस्लिम धर्म के पवित्र ग्रंथ कुरआ़न शरीफ के साथ-साथ भारतीय संविधान का भी सूक्ष्मता से अध्ययन करना
8) धार्मिक शिक्षा के बजाए सामाजिक और व्यावसाहिक शिक्षा पर प्रभाव देना।
9) मुस्लिम समाज के विविध तत्व तथा प्रवृत्तियों को परखना एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
10) उत्तर आधुनिकता की दौड़ में शहरीकरण के कारण गाँव का प्रत्येक व्यक्ती शहर की ओर स्थलांतर करना चाहता है या फिर कर रहा है। मूलतः स्थलांतर के साथ-साथ अपने शहर के भाग दौड़ की दुनियाँ में मूल संस्कृति, ईश्वर की भक्ति को भूल गया है। ऐसे व्यक्तियों को मुस्लिम समाज के प्रति सजग करना।
11) मुस्लिम रचनाकारों की भाषा मूलतः उर्दू, फारसी, अरबी मिश्रित हिंदी है।इस भाषा की विशेषताओं तथा शिल्प-विधान को परखना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहा है।

3) अनुसंधान पध्दतियाँ (Methodology of The Study)

ज्ञान का कोश इतना विस्तृत है कि, इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए अध्ययनार्थी को उसे छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण करना पड़ता है। इसलिए शोध कार्य की व्यापकता को देखकर निम्न अनुसंधान पद्धतियों का सहारा लिया जायेगा।

अध्यापन और निष्कर्ष पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, प्रयोगात्मक पद्धति, पूर्व अनुसंधान व्यक्ति से साक्षात्कार तथा प्रश्नावली पद्धति आदि।

4) अनुसंधान कार्य (Research Work)

वस्तुतः हर शोध विषय की अपनी सीमा होती है। शोध विषय को सुचारू रूप से और सुनियोजित रूप से ही अनुसंधान कार्य में सरलता एवं स्तरीयता से संपन्न होता है। अध्ययन की सुविधा और विषय की व्यापकता की दृष्टि से मैंने अपने शोध-प्रबंध को निम्नांकित सात अध्यायों में विभाजित कर "अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श" इस विषय का विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत कर यह शोध कार्य पूर्ण किया जायेगा।

प्रथम अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय- मुस्लिम विमर्श :अर्थ एवं स्वरूप

तृतीय अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन

चतुर्थ अध्याय-अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श

पंचम अध्याय -अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श

षष्ठम् अध्याय-अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श

सप्तम् अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में शिल्पगत अध्ययन

प्रथम अध्याय:अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय में लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश ड़ाला है। जिनमें लेखक के जन्म, बचपन, नामकरण, परिवार, माता-पिता, भाई-बहन आदि सभी की जानकारी दी है।

द्वितीय अध्याय: मुस्लिम विमर्श :अर्थ एवं स्वरूप

द्वितीय अध्याय में मुस्लिम विमर्श शब्द की उत्पत्ति, मुस्लिम विमर्श शब्द का अर्थ एवं स्वरूप, मुस्लिम विमर्श की परिभाषा, मुस्लिम विमर्श का वर्गीकरण, मुस्लिम सामाजिक विमर्श, मुस्लिम आर्थिक विमर्श, मुस्लिम धार्मिक विमर्श, मुस्लिम सांस्कृतिक विमर्श, मुस्लिम राजनीतिक विमर्श, मुस्लिम साहित्यिक विमर्श आदि का अध्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय: अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन

तृतीय अध्याय में अब्दुल बिस्मिल्लाह जी के पाँच उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन किया है।

जहरबाद - इस उपन्यास की कथा भूमि मध्य-प्रदेश के पूर्वी छोर पर स्थित मंडला आँचल की है। वहाँ के ग्रामीण परिवेश में रचे गये इस उपन्यास में ऐसे चरित्रों का निरुपण हुआ है जो आजाद हिंदुस्तान की बड़ी-बड़ी विकास योजनाओं से एकदम अछूते और अपरिचित हैं, और गरीबी की रेखा के बहुत नीचे का जीवन जी रहे है। उनके माध्यम से लेखक ने समाज की विसंगतियों वर्जनाओं और दारुण विषमताओं को मार्मिक ढंग से उकेरा है। यह उपन्यास रोज-रोज मरकर जीने वाले अनगिनत पति-पत्नियों, पुत्रों और प्रेमी-प्रेमिकाओं को दुःख-दर्द की ऐतिहासिक गाथा है।

झीनी-झीनी बीनी चदरिया - यह उपन्यास बनारस के साड़ी बुनकरों पर केंद्रित है। यह उपन्यास हिंदी कथा साहित्य में एक नये अनुभव को मूर्त करता है। इस उपन्यास में साड़ी बुनकरों की अभावग्रस्त और रोग जर्जर स्थिति का चित्रण किया है।

दंतकथा - इस उपन्यास में कथा का नायक एक मुर्गा है। जो मनुष्य के हत्यारी नियत को भाँपकर अपनी प्राणरक्षा के लिए एक नाबदान में घुस जाता है। उसका शरीर उस नाबदान से बड़ा है। फिर भी वह प्रयत्न करते अपनी जान बचाने के लिए अंदर घुस जाता है। वह एक स्वाभिमानी मुर्गा है। उसने मनुष्य को बहुत ही नजदीक से पहचाना है। उसके मन में मनुष्य के प्रति नफरत है। वह कहती है मैं इस नाबदान में घुसकर मर जाऊँगा मगर इस पापी मनुष्य प्राणी के हाथों लगाकर मैं जिबह नहीं होना चाहता क्योंकि जिबह करने के बाद उसने मुर्गे की स्थिति को देखा था।

समर शेष है - यह अब्दुल बिस्मिल्लाह का आत्मकथनात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक के बचपन से लेकर युवा अवस्था तक का वर्णन किया है। इस आत्मकथा की शुरुवात लेखक के जीवन यात्रा से होती है जो चिलचिलाती हुई धुप में एक इक्के में बैठकर जा रहे हैं। इसमें लेखक ने स्वयं की पीड़ा और अदम्य जीवन संघर्ष की दास्तान अपने कलम के माध्यम से प्रस्तुत की है।

मुखड़ा क्या देखे - इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर साम्प्रदायिकता का चित्रण किया है। लेखक ने इस उपन्यास में उत्तर प्रदेश के एक देहात का चित्रण किया है, जिसका नाम बलापुर है। इस गाँव में सृष्टिनारायण पांडे ओर रामवृक्ष पांडे नाम के दो भाई है। जो गाँव के कर्ता-धर्ता हैं। वे जो चाहेंगे वही गाँव में होता है। इन दोनों का गाँव में रोब है, इज्जत है, सम्मान है।

इस तरह अब्दुल बिस्मिल्लाह जी ने मुस्लिम समाज के भीतरी हालात, मुश्किलों और उनके दबे-कुचले सपनों का चित्रण इन उपन्यासों में किया है।

चतुर्थ अध्यायः अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श

चतुर्थ अध्याय में जहरबाद उपन्यास में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श, झीनी-झीनी -बीनी चदरिया उपन्यास में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श, दंतकथा उपन्यास में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श, समर शेष है उपन्यास में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श, मुखड़ा क्या देखे उपन्यास में सामाजिक एवं आर्थिक मुस्लिम विमर्श आदि का अध्ययन किया है।

मुस्लिम समाज की समाज-व्यवस्था को लेकर चर्चा की है। इनमें प्रमुखता से मुस्लिम समाज व्यवस्था, कुटुंब पद्धति, विवाह पद्धति, रिश्तेदारों के साथ संबंध, स्त्री की शिक्षा, परदा पद्धति, बहु-विवाह आदि का विवेचन किया है।

बिल्सिल्लाह जी ने मुस्लिम समाज की आर्थिक स्थिति के स्वरूप को स्पष्ट किया है। इसमें प्रमुखता से इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था का परिचय देकर धनार्जन के संबंध में नियम तथा सिद्धांत को स्पष्ट किया है। इसके पश्चात अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में चित्रित आर्थिक अभाव को उद्घाटित किया है।

पंचम अध्याय: अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श

पंचम अध्याय में जहरबाद उपन्यास में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श, झीनी-

झीनी -बीनी चदरिया उपन्यास में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श, दंतकथा उपन्यास में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श, समर शेष है उपन्यास में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श, मुखड़ा क्या देखे उपन्यास में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुस्लिम विमर्श का अध्ययन किया हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने मुस्लिम समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश को प्रस्तुत किया है। इसमें प्रमुखता से इस्लाम का उदय, इस्लाम का अर्थ, परिभाषा, मुस्लिम संस्कृति आदि सभी देखने के पश्चात अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में चित्रित धर्म और संस्कृति को प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठम् अध्याय:अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श

षष्ठ्म अध्याय में जहरबाद उपन्यास में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श, झीनी-झीनी बीनी चदरिया उपन्यास में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श, दंतकथा उपन्यास में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श, समर शेष है उपन्यास में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श, मुखड़ा क्या देखे उपन्यास में राजनीतिक एवं शैक्षिक मुस्लिम विमर्श

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने मुस्लिम समाज की राजनीतिक व्यवस्था, इस्लामी शासन, नागरिकों के अधिकार तथा कर्तव्यों का विस्तार से विवेचन किया है। इसके उपरांत अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में राजनीतिक स्थिति और उसके पहलुओं का उल्लेख किया है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने मुस्लिम समाज में शिक्षा का स्थान और उसके पिछड़ेपन के कारणों पर प्रकाश ड़ाला है। इसके पश्चात अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में शैक्षिक चित्रण तथा उससे होने वाले परिणामों की चर्चा की है।

सप्तम् अध्याय:अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में शिल्पगत अध्ययन

सप्तम् अध्याय में अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों को शिल्पगत अध्ययन किया है जिसमें शिल्प शब्द की व्युत्पत्ति, शिल्प की परिभाषा, शिल्प का स्वरूप, शिल्प के तत्त्व, उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन किया जायेगा।

5) अनुसंधान की उपयोगिता (Significance of The Research)

“अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श”यह अनुसंधान कार्य के उपरांत ज्ञात होता है कि, मुस्लिम समाज जीवन का वह चित्र है जिसमें मनुष्य की सही अथवा गलत छवि का अंकन होता है। उपन्यासकार का उद्देश्य ही मानव चरित्र तथा उसके मानवतावाद पर प्रकाश डालना है; औरमुस्लिम समाज जीवन तथा उनके समस्या को सुलझाना है। इसलिए अब्दुल बिस्मिल्लाहका योगदान हिंदी साहित्य में मुस्लिम विमर्शके लिए महत्वपूर्ण रहा है।

समकालीन मुस्लिम उपन्यासकारों ने भी प्रमुख रूप से मुस्लिम समाज की समस्या और उनकी मानसिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में मुस्लिम जीवन की परिवर्तित परिस्थिति में भौतिक सत्यों के प्रामाणिकता दी है, तथा परंपरा का विरोध दिखाया है। धार्मिक संदर्भों की परंपरागत स्थिति के सर्वथा विलग होकर धर्म के प्राचीन प्रतिमानों एवं रूढ़ि सत्यों के प्रति टूटती मान्यताएँ आदि को वर्णित कर परिवर्तित विचारधाराओंकी स्वीकृतिकरण की प्रक्रिया में मानवीय दृष्टिकोणों को ही प्रधानता दी है। नये समाज से तादात्म्य स्थापित करने के लिए अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने उपन्यासों नयी दृष्टि पैदा की है।

6) उपलब्धियाँ (Availability of the Thesis)

1. “अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श”इसअनुसंधान कार्य में मुस्लिम समाज का जो चित्रण हुआ है, उस चित्रण के माध्यम से मुस्लिम समाज की समस्या सभी को अवगत हो जाएगी।
2. वर्तमान घटित घटनाओं के प्रति मुस्लिम समाज सचेत दिखाई देगा।
3. मुस्लिम समाज की स्त्रियों का स्थान दुय्यम या तिसरे दर्जे का जीवन चिंता का विषय है परिणाम स्वरूप आज अनेक मुस्लिम स्त्रिया अपने अधिकार के लिए प्रयत्न कर रही है।

4. आज मुस्लिम समाज में राजनीति के क्षेत्र तथा नेतृत्व का अभाव दिखाई दे रहा। यह चित्र अवगत हो जाएगा।
5. भारतीय राजघटना में देश के सभी धर्म एवं सभी समाज को समान अधिकार दिए है, लेकिन राजनीतिक व्यवस्था के कारण मुस्लिम समाज को अपने अधिकारों के लिए झगडना पड रहा है।
6. मुस्लिम समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक तत्वों तथा उनके आचरण पद्धति का विरोध न करते हुए उन्हें भारतीय नागरीक स्वीकार किया जाएगा।

7) अनुसंधान की व्याप्ति और सीमाएँ (Research It's Scope and Limitation)

"अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में व्यक्त मुस्लिम विमर्श"यह शोध-प्रबंध हिंदी साहित्य की व्यापक आयाम की अभिव्यक्ति करता है। प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान की रूपरेखा लिखते समय इस विषय के विविध आयाम मेरे सामने आये हैं। प्रस्तुत शोध की अपनी सीमा के कारण उन विविध आयामों का विस्तृत विवेचन करना संभव नहीं होगा। अतः भविष्य में निम्न विषय पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य कर सकता है।

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता।
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह उपन्यासों में व्यक्त लोक संस्कृति : एक अनुशीलन
3. हिंदी के मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों में व्यक्त कर्यक्षेत्रीय जीवन की उपज।
4. हिंदी के मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों में व्यक्त आँचलिक बोध।
5. हिंदी के मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों में व्यक्त अल्पसंख्यक विमर्श।

यह मेरी विषयगत मर्यादा है कि मैं इन विषयों के प्रति ध्यान नहीं दे सका आने वाले शोधार्थी इन विषयों में एकाद विषय को चुनकर इन कमियों को पूरा कर सकते हैं।

8) मूल्यांकन एवं निष्कर्ष(Evalution Cum-Conclusion)

संपूर्ण अनुसंधान के उपरांत यह ज्ञात होता है कि उपन्यास मानव जीवन का वह चित्र है। जिसमें मानव की सही अथवा गलत छवि का अंकन होता है। उपन्यास का उद्देश्य ही मानव चरित्र पर प्रकाश ड़ालना और उसके रहस्यों को सुलझाना है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इस दृष्टि से उपन्यास विधा एक मात्र ऐसी विधा है। जो अपने आप में अधिकाधिक विषय को बड़े कलात्मकता के साथ समेटती है। समकालीन मुस्लिम उपन्यासकारों में अब्दुल बिस्ल्लािह का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने मुस्लिम विमर्श की समस्या और उनकी मानसिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में मुस्लिम जीवन की परिवर्तित परिस्थिति में भौतिक सत्यों के यथार्थ को प्राथमिकता दी है तथा

परंपरा का विरोध दिखाया है। धार्मिक संदर्भों की परंपरागत स्थिति के सर्वथा अलग होकर धर्म के प्राचीन प्रतिमानों एवं उसके बदलते स्वरूप को व्यक्त किया है।

इस प्रकार अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों पर अनुसंधान करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं।

1) अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में मुस्लिम समाज का जो चित्रण हुआ है, उस चित्रण के माध्यम से मुस्लिम समाज की समस्या सभी को अवगत हो जाएगी।
2) मुस्लिम समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक तत्वों तथा उनके आचरण पद्धति को स्वीकार किया जाएगा।
3) मुस्लिम समाज में पनपती हुई रूढ़ियों तथा अंधविश्वास का विरोध किया जाएगा।
4) मुस्लिम समाज शिक्षा पाकर आधुनिकता की और बढ़ रहा है।
5) मुस्लिम समाज में इस्लाम ने स्त्री-पुरुषों को समान अधिकार दिये हैं। लेकिन पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में आज भी स्त्री को उसके अधिकारों के लिए झगड़ना पड़ रहा है।
6) मुस्लिम पुरुष की तरह स्त्रियाँ भी राजनीति में सक्रिय हिस्सा ले रही है।
7) मुस्लिम समाज अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयास कर रहा है।
8) आज मुस्लिम समाज में राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व का अभाव दिखाई देता है।
9) वर्तमान घटित घटनाओं के प्रति मुस्लिम युवक सचेत दिखाई देता है।

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ. मूल ग्रंथ

1) अतिथि देवो भव, अब्दुल बिस्मिल्लाह, सं.1990 राजकमल प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली।
2) कागज का घोड़ा, अब्दुल बिस्मिल्लाह, अभिरुचि प्रकाशन 3/314 कर्ण गल्ली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली।
3) कलियुग का रथ, अब्दुल बिस्मिल्लाह, अभिरुचि प्रकाशन 3/314 कर्ण गल्ली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली।

4) छोटे बूतों का बयान, अब्दुल बिस्मिल्लाह, युगबोध प्रकाशन 2/394, सिकरौल कैण्ट, वाराणसी

5) जहरबाद, अब्दुल बिस्मिल्लाह,राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1 बी- नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज दिल्ली।

6) झीनीझीनी बीनी चदरिया, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1 बी- नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज दिल्ली।

7) दंतकथा, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1 बी- नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज दिल्ली।

8) दो पैसे की जन्नत, अब्दुल बिस्मिल्लाह, अभिरुचि प्रकाशन 3/314 कर्ण गल्ली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली।

9) मुझे बोलने दो, अब्दुल बिस्मिल्लाह, युगबोध प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।

10) मुखड़ा क्या देखे, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1 बी- नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज दिल्ली।

11) रैन बसेरा, अब्दुल बिस्मिल्लाह, सं.1993, वाणी प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली।

12) समर शेष है, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1 बी- नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज दिल्ली।

ब. आधार ग्रंथ

1) हिन्दी कहानी : अन्तरंग पहचान - नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-2, द्वितीय सं.1994

2) हिन्दी गद्य साहित्य : आधुनिक आयाम - नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-2 द्वितीय सं. 1994 किताबघर घर, नई दिल्ली-2, प्रथम संस्करण-1994

3) अभिनव कदम - राही मासूम, सं.चंद्रदेव यादव, साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था मंथन मऊनाथ भंजन (मऊ)

4) आधुनिक बोध और विद्रोह, डॉ.हरदयाल सं.1979 राजेश प्रकाशन, कृष्णनगर, दिल्ली

5) इस्लाम एक परिचय, अबू मुहम्मद इमामुद्दीन, प्रकाशक, इस्लामी साहित्य अकादमी, वाराणसी

6) इस्लामी की जीवन व्यवस्था, सैय्यद अबुलआला मोद्दी सं.2001, इस्लामी साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली।

7) कुरआन मजीद, अनु.मुहम्मद फारूखखाँ, प्रकाश मकतबा अलहसनात 1397 पहाड़ी इमली जामा मस्जिद दिल्ली

क. पत्र-पत्रिकाएँ

क्रान्ति, मासिक पत्रिका

ड. कोश

1) मानविकी परिभाषिक कोश (साहित्य खण्ड), डॉ.नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

2) हिन्दी शब्द कोश, डॉ.हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली।

3) उर्दू-हिन्दी कोश, प्रकाशक, शब्दलोक प्रकाशन, लाजपत नगर, वाराणसी-22

इ. इंटरनेट वीकिपीडिया

शोधछात्र

मनियार अखिल बाबुसाब

अहमदपुर जि.लातुर

शोधनिर्देशक

डॉ.बळीराम संभाजी भुक्तरे

हिंदी विभाग

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,

उदगीर जि.लातूर

Research Guide
Dr. Allabaksh H. Jamadar
HOD & Associate Professer (Dept. Hindi)
Bhai Kisanrao Deshmukh
College, Chakur Dist.Latur 413513

14